पाठ-13

ईमानदार बालक

आइए सीखें - ● एकांकी विधा से परिचय ● हाव-भाव के साथ वाचन ● ईमानदारी की भावना का विकास, ● विशेषण एव काल का परिचय

पात्र परिचय

बसन्त	-	एक गरीब बालक
प्रताप	-	बसन्त का छोटा भाई
पंडित राजकिशोर	-	एक मजदूर नेता
भीखू	-	बसन्त का चाचा

डॉक्टर वर्मा तथा दो राह चलते व्यक्ति।

पहला दृश्य

(एक बड़े नगर का बाजार। मंच पर आने-जाने तथा दुकानों पर लेन-देन संबंधी शोर और भीड़ का दृश्य। इसी बीच एक लड़का नंगे पैर, फटे कपड़े पहने तथा थैले में सामान सँभाले भागता हुआ आता है)

बसन्त- (जोर से आवाज लगाते हुए) छन्नी ले लो, बटन ले लो, दियासलाई ले लो।

(इसी समय एक मजदूर नेता पं. राजकिशोर उधर से निकलते हैं। बसन्त उनके पीछे दौड़ता है।)

साहब, बटन लीजिए, देशी बटन। साहब, दियासलाई लीजिए।

राजकिशोर- नहीं भाई, कुछ नहीं चाहिए।

शिक्षण-संकेत : ■ इस एकांकी को अभिनय के साथ पढ़ाएँ ■ एकांकी का सारांश बताएँ ■ ईमानदारी के गुणों का विकास करने वाली अन्य कहानी सुनें और सुनाएँ।

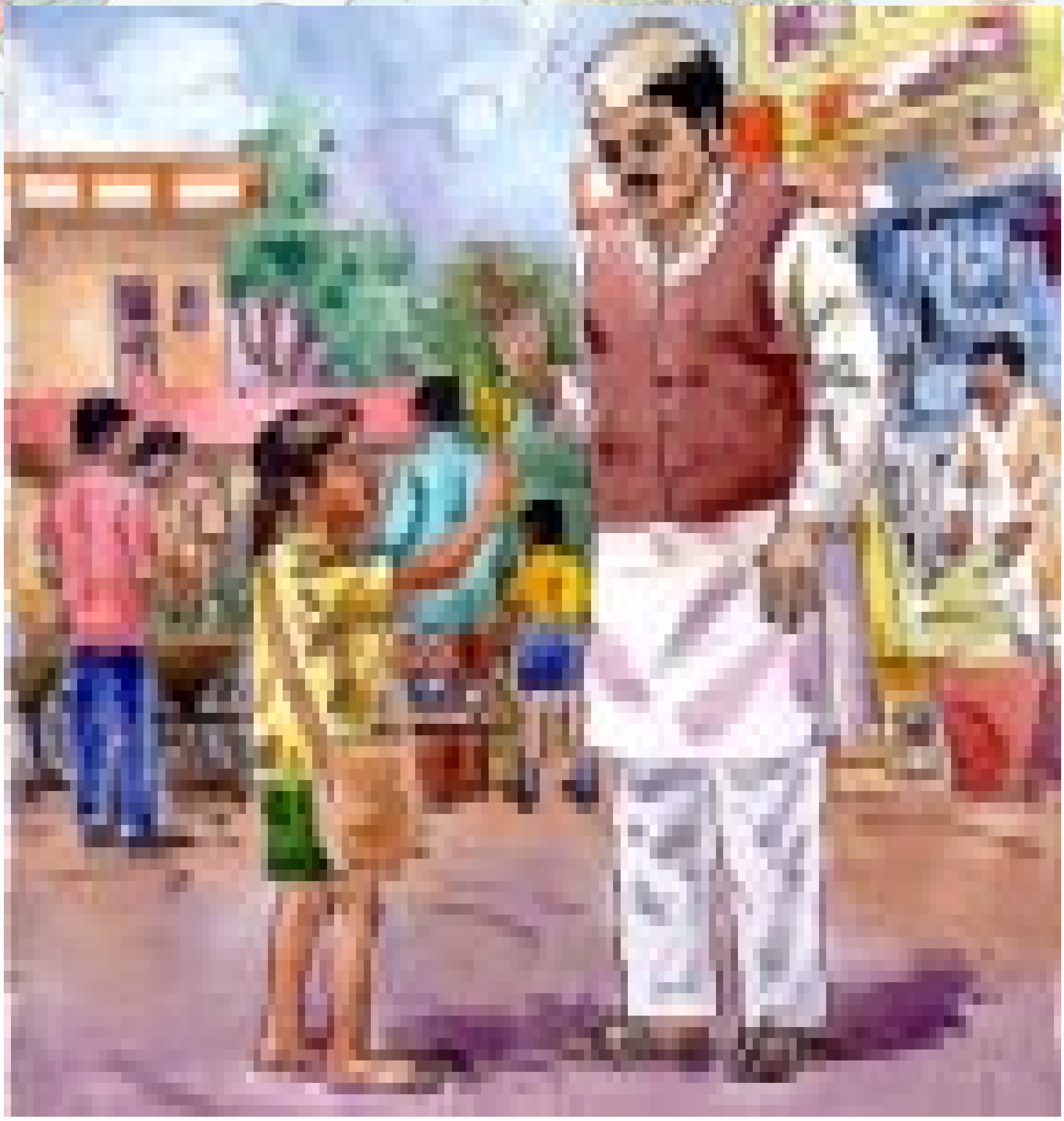

बसन्त– साहब, कुछ तो लीजिए। देखिए! हर चीज कितनी सस्ती है?

राजकिशोर– भाई, मुझे कुछ नहीं चाहिए। जाओ, किसी और को दो।

बसन्त– साहब, छन्नी लीजिए, दूध छानिए, चाय छानिए।

राजकिशोर– (तीव्र स्वर में) दूर हटो। कह दिया मुझे कुछ नहीं चाहिए।

बसन्त– (रुआँसा होकर) साहब, अभी तक कुछ नहीं बिका। आपसे आशा थी साहब, कुछ तो ले लेंगे।

राजकिशोर– (नम्र होकर जेब से दो पैसे निकालते हैं) लो, ये दो पैसे लो और जाओ।

बसन्त– नहीं साहब, यह तो भीख है। मैं ऐसे नही लूँगा। आप छन्नी ले लें।

(राजकिशोर पर इस बात का बड़ा असर होता है, लेकिन जब अपनी जेब टटोलते हैं, तो उन्हें और पैसे नहीं मिलते।)

राजकिशोर– भाई, मेरे पास पैसे नहीं हैं। होते तो ले लेता। नोट हैं।

बसन्त– (उदास होकर) नोट हैं। (कुछ सोचकर) तो आप नोट मुझे दीजिए मैं अभी बाजार से भुनाकर लाता हूँ।

राजकिशोर– भाई, तुम तो .... अच्छा लो, भुना लाओ। जल्दी आना।

बसन्त– (प्रसन्न होकर) अभी आया साहब ! आप यहीं ठहरें। अभी पलक मारते ही आया।

(बसन्त नोट सँभाले भागकर बाजार जाता है। राजकिशोर वहीं खड़े रहते हैं। तभी एक परिचित मनुष्य वहाँ आता है। उन्हें वहाँ खड़ा देखकर रुक जाता है।

कृष्णकुमार– पंडितजी, कहिए, यहाँ कैसे खड़े है ?

राजकिशोर– (हँसकर) भाई, क्या बताऊँ ? एक बालक है। एक छन्नी दे गया है। खुले पैसे थे नही। नोट भुनाने गया है।

कृष्णकुमार– नोट भुनाने गया है ! तब तो विश्वास रखिए, वह अब नहीं आने वाला।

राजकिशोर– पर भाई, वह लड़का तो मुझे बड़ा भला लगता था। विश्वास नहीं होता। अच्छा चलो, कोई बात नहीं। समझेंगे, एक रुपया देकर यह भी एक पाठ पढ़ा।

कृष्णकुमार– (और भी तेजी से हँसता है) पाठ सुन्दर है। अजी साहब, भले न बनें, तो उनके चक्कर में आए कौन ? मैं तो चला।

(दोनों अलग-अलग रास्तों पर बढ़ जाते हैं। पर्दा गिरता है)

दूसरा दृश्य

(नगर का एक भाग, जहाँ मध्यम वर्ग के लोग रहते हैं। एक ओर किशनगंज का बोर्ड लगा है। संध्या हो जाती है। एक दुबला-पतला लड़का जल्दी-जल्दी आता है नंगे पैर, फटे कपड़े। वह बसन्त का छोटा भाई है। नाम है प्रताप । आते-जाते व्यक्तियों से कुछ पूछ रहा है। उसके मुख पर बेचैनी है।)

प्रताप- किशनगंज यही है?

एक व्यक्ति- हाँ ।

प्रताप- क्या यहाँ राजकिशोरजी रहते हैं ?

दूसरा व्यक्ति- हाँ। उधर देखो। वह नीला परदा है न। उधर आवाज दो। वे ऊपर रहते हैं।

(प्रताप उस मकान के पास जाकर आवाज लगाता है)

प्रताप- पण्डित राजकिशोर जी!

राजकिशोर- (ऊपर से झाँककर) कौन ?

प्रताप- जी, मुझे मेरे भाई ने भेजा है।

राजकिशोर- तुम्हारे भाई ने! ठहरो मैं आता हूँ। (बाहर आकर) क्या बात है, बच्चे!

प्रताप- आज दोपहर को मेरे भाई ने आपको एक छन्नी बेची थी।

राजकिशोर- हाँ, हाँ, आज मैंने एक लड़के से एक छन्नी ली थी और उसे एक रुपये का नोट दिया था।

प्रताप- वह नोट भुनाने गया था, मगर जब भुनाकर लौट रहा था, तो मोटर से उसकी टक्कर हो गई।

राजकिशोर- (अचरज से) क्या कहा? मोटर से टक्कर।

प्रताप– (दुखी होकर) उसके पैसे बिखर गए, सामान न जाने कहाँ गया? उसके दोनो पैरों में चोट आई है।

राजकिशोर– क्या कहा! पैरों में चोट?

प्रताप– (रुआँसा होकर) हाँ इसलिए वह आपके पास न आ सका। वह बेहोश हो गया था। बड़ी मुश्किल से वह घर लाया गया। बहुत देर में जब उसे होश आया, तो उसने मुझे आपके पैसे लौटाने को कहा।

(प्रताप राजकिशोर के हाथ पर पैसे रख देता है)

राजकिशोर– (सहसा) तुम्हारा भाई कहाँ है अभी?

प्रताप– घर पर ।

राजकिशोर– तुम्हारे माँ-बाप ....।

प्रताप– (रुँआसे स्वर में) वे तो बहुत पहले ही गुजर गए।

राजकिशोर– क्या? (एकदम सहज होकर) बच्चे, रोओ मत। मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूँ। अभी ....

प्रताप– आप चलेंगे?

राजकिशोर– हाँ, घर कहाँ है, तुम्हारा ?

प्रताप– विजय नगर में।

राजकिशोर– (पुकारकर) अमरसिंह! देखो मैं विजयनगर जा रहा हूँ। तुम इसी समय डॉ. वर्मा को लेकर वहाँ आओ। कहना, एक लड़के के पैरों में मोटर की टक्कर से चोट लग गई है। जल्दी ही आना। (मुड़कर) आओ, बच्चे।

(प्रताप चकित-विस्मित होकर उन्हें देखता है। फिर ठगा-सा उनके आगे-आगे चल पड़ता है)

परदा गिरता है।

तीसरा दृश्य

(विजय नगर में एक कच्चा घर। मंच पर अन्दर के ओसारे का एक दृश्य। जमीन पर फूस का ढेर। उसी पर बसन्त लेटा है। गले तक कम्बल ढँका है, रह-रहकर दर्द से कराह उठता है। भीखू खाँस-खाँस कर बार-बार उस पर गुस्सा होता है)

भीखू- मैं कहता हूँ, तू देखकर नहीं चलता। आजकल के बालक हवा में उड़ते हैं।

बसन्त- चाचा गुस्सा न करो, बड़ा दर्द है।

भीखू- दर्द तो होगा ही और क्या आराम मिलेगा?

प्रताप- यह रहा साहब!

राजकिशोर- (बसन्त को लक्ष्य कर) बसन्त !

भीखू- (एकदम चकित और भावावेश में) आप आए हैं !

राजकिशोर- कहाँ चोट लगी है, बेटे! देखूँ।

(राजकिशोर पास आकर टाँगें देखते हैं। पैरों में पट्टी बँधी है। टाँगें छूते ही उसके मुख से चीख निकल जाती है।)

बसन्त- (दर्द से कराहते हुए) लौटते समय मैं मोटर से टकरा गया था, इसलिए उसी समय आपके पैसे नहीं लौटा सका। आपने न जाने क्या सोचा होगा?

राजकिशोर- उस बात की चिन्ता न करो, बेटे। मैंने डॉक्टर को बुलाया है। तुम जल्द ही ठीक हो जाओगे।

(अमरसिंह के साथ डॉक्टर का प्रवेश)

भीखू- (हर्ष से) डॉक्टर साहब आ गए, डॉक्टर साहब। बसन्त यह रहा। बड़ा गरीब लड़का है, साहब। (डॉक्टर पैर देखता है। बसन्त जोर से होंठ भींचता है। प्रताप की आँखों से आँसू झरते हैं। वह कभी भाई को देखता है कभी डॉक्टर को।)

राजकिशोर- (उत्सुकता से) क्यों डॉक्टर साहब, ठीक तो हो जाएगा न ?

डॉक्टर- पंडितजी, ऐसा लगता है, एक पैर की हड्डी टूट गई है। इसके पैर का एक्सरे निकाल कर देखना पड़ेगा। दूसरा पैर ठीक है पर इसे अभी अस्पताल पहुँचाना चाहिए, देर हो गई तो ....

राजकिशोर- तो अभी ले चलो। मैं मरीजों की गाड़ी (एम्बुलेन्स) के लिए फोन करता हूँ।

डॉक्टर- हाँ, हाँ कीजिए। मैं तब तक इंजेक्शन लगाता हूँ।

(डॉक्टर, इंजेक्शन लेकर बंसत के पास पहुँचकर उसे इंजेक्शन लगाने लगते हैं।

बसन्त- (आँखे खोलकर) आप .... आप क्या कर रहे हैं?

डॉक्टर- मैं इंजेक्शन लगा रहा हूँ। बेटा!

बसन्त - यह तो बहुत महँगा होगा! मैं तो बहुत गरीब हूँ।

राजकिशोर- (बीच में ही मुस्कराते हुए) तुम गरीब हो, बेटे! पर तुम्हारे पास तो वह धन है, जिसके लिए दुनिया तड़पती है। तुम्हारी ईमानदारी तुम्हारा सबसे बड़ा धन है। (मुड़कर) डॉक्टर साहब जब तक मैं न आऊँ आप कृपया यहाँ रहें और देखिए, पैसे की चिंता न करें।

भीखू- हुजूर, आप ठीक कह रहे हैं। लड़का खरा सोना है। माँ-बाप मर गए। डेढ़ साल से मेरे पास है। हुजूर! दिनभर बाजार में मेहनत कर कमाता है। बड़ा ही ईमानदार है।

(भीखू बोलता-बोलता राजकिशोर के पीछे-पीछे जाता है। डॉक्टर प्रताप की सहायता से इंजेक्शन तैयार करते हैं। बसन्त आँख बन्द कर लेता है। डॉक्टर इंजेक्शन लगाता है। बसन्त दर्द से होठ भींचता है। प्रताप भाई का सिर थामता है और परदा गिरता है।

शब्दार्थ

राह - रास्ता

शरणार्थी - शरण चाहने वाला

नोट भुनाना - नोट को छोटे सिक्कों में बदलना

चक्कर में आना -जाल में फँसना।

पलक मारते ही - देखते-देखते, क्षण भर में।

मध्यम वर्ग - न गरीब न अमीर अर्थात सामान्य आर्थिक स्थिति वाला।

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

(क) राजकिशोर कौन थे, तथा वे कहाँ रहते थे?

(ख) बसन्त क्या-क्या बेचता था?

(ग) राजकिशोर के दो पैसे देने पर बसन्त ने क्या कहा ?

(घ) बसन्त नोट लेकर कहाँ गया था?

(ङ) बसन्त के न लौटने का क्या कारण था?

(च) बसन्त के घायल होने की खबर सुनकर राजकिशोर ने क्या किया?

2. किसने किससे कहा?

किसने कहा	कथन	किससे कहा
----------	साहब बटन लीजिए, देशी बटन।	----------
----------	जाओ किसी और को दे दो।	----------
----------	पण्डित जी कहिए, यहाँ कैसे खड़े हैं।	----------
----------	तब विश्वास रखिए, वह अब नहीं आने का।	----------
----------	जी, मुझे मेरे भाई ने भेजा है।	----------

भाषा अध्ययन

1. 'अ' लगाकर नए शब्द बनाइए -

परिचित - अपरिचित

विश्वास - -----------

समय - -----------

प्रिय - -----------

2. पढ़िए, समझिए और लिखिए :

बसंत **गरीब** है।

बसंत **ईमानदार** है।

बसन्त **साहसी** है।

प्र. बसन्त कैसा है? उ. गरीब, ईमानदार और साहसी

● गरीब, ईमानदार और साहसी बसन्त की विशेषता बताते है।

हवा और बादल की विशेषताएँ बताइए।

क. हवा ठंडी है।

हवा गर्म है।

हवा तेज है।

प्र. हवा कैसी है? उ. -----------

ख. बादल काले है।

बादल सफेद है।

बादल घने हैं।

प्र. बादल कैसे हैं? उ. -----------

यह भी जानिए -

जो शब्द संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेषण कहते हैं।

3. सही अर्थ चुनिए -

(क) बसन्त **नोट भुनाने** गया (नोट सेंकने /बराबर मूल्य के पैसे) ✓

(ख) एक रुपया लेकर यह भी **पाठ पढ़ा** (शिक्षा लेना/ पाठ पढ़ना)

(ग) अभी **पलक मारते** ही आया (बहुत जल्दी / पलक झपकना)

(घ) लड़का **खरा सोना** है। (बहुत अच्छा/ अच्छा सोना)

4. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

नीली - --------------------------------

ऊँचा - --------------------------------

साफ - --------------------------------

अच्छी - --------------------------------

6. पढ़िए, समझिए और लिखिए

अस्पताल : डॉक्टर, इंजेक्शन, एक्स-रे, एम्बुलेंस

रेलवे स्टेशन : ------, ------, ------, ------

विद्यालय : ------, ------, ------, ------

डाकघर : ------, ------, ------, -------

5. पढ़िए समझिए और लिखिए -

(क)	(ख)	(ग)
जैसे-बसन्त खिलौने बेचता है।	बसन्त खिलौने बेचता था।	बसन्त खिलौने बेचेगा।
● प्रताप गाना गाता है।	प्रताप गाना ---------	प्रताप ---------
● मीरा सुन्दर खिलौने -----	मीरा सुन्दर खिलौने बनाती थी	मीरा सुन्दर खिलौने ---
● राजेश तेज ----------	राजेश तेज -----------	राजेश तेज दौड़ेगा।

यह भी जानिए -

काल (समय) तीन प्रकार के होते हैं- वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्य काल।

योग्यता विस्तार

- इस पाठ का अभिनय करें।
- यदि आपको अभिनय करने के लिए कहा जाए तो किस पात्र का अभिनय करेंगे।
- इस एकांकी का अभिनय करने में कौन-कौनसी सामग्री लगेगी। सूची बनाइए।
- ईमानदार बालक की कहानी अपने शब्दों में लिखिए।

◆ यह कहानी पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

सच्चा बालक

एक दिन गुरुजी ने अपनी कक्षा के बच्चों को गणित का एक प्रश्न घर से हल करके लाने को कहा।

अगले दिन जब बच्चे शाला में पहुँचे तो सबने अपना-अपना गणित का हल किया हुआ प्रश्न गुरुजी को दिखाया, परंतु किसी का भी हल ठीक नहीं निकला।

जब सब बच्चे अपनी-अपनी कॉपी दिखा चुके तब गोपाल ने अपनी कापी दिखाई। प्रश्न का उत्तर ठीक था। गुरुजी प्रसन्न हो गए और गोपाल की प्रशंसा करने लगे। अपनी प्रशंसा सुनकर वह बालक फूट-फूट कर रोने लगा। वह सिसकियाँ भरते हुए कहने लगा "गुरुजी! आप मेरी प्रशंसा कर रहे है, किन्तु यह प्रश्न मैने अपने-आप हल नहीं किया। यह तो एक मित्र ने मुझे हल करके दिया है। मुझे अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर दुःख हो रहा है।"

गुरुजी ने गोपाल की सच्चाई की प्रशंसा करते हुए कहा- "बेटा! एक दिन तुम अवश्य अपना और अपने देश का नाम उज्ज्वल करोगे।"

बड़ा होकर वह बालक गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ। देश को स्वतंत्र कराने में गोखलेजी का बहुत बड़ा योगदान रहा।